Vijoy Shankar Mallik

# काव्य विलास

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

# काव्य विलास

( मैथिलीक सोन्हगर काव्यगुच्छ )

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

इम्प्रेशन पब्लिकेशन
पटना

काव्य विलास

( मैथिलीक सोन्हगर काव्यगुच्छ )

प्रथम संस्करण : 2018

सर्वाधिकार : विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

ISBN : 978-81-934306-5-1

आवरण : आनन्द कुमार मल्लिक

मूल्य : रु. 510.00

प्रकाशक : इम्प्रेशन पब्लिकेशन
सालिमपुर अहरा 'बॉलिया',
कदमकुआँ,
पटना - 800003
मो. - 8877663597

मुद्रक : बी.के.ऑफसेट
नवीन शाहदरा,
नई दिल्ली-32

---

*Kavya Vilas* (Poems by Vijay Shankar Mallik 'Sudhpati')

## अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 1. | माँ सरस्वती सँ | 1 |
| 2. | अपना मादे | 2 |
| 3. | हमर जन्मस्थल | 4 |
| 4. | संस्कार संस्कृतिक मूल | 6 |
| 5. | संस्कृतिक आइना | 7 |
| 6. | मिथिला मैथिल मैथिली | 9 |
| 7. | तुलना नहि मिथिला धामक | 10 |
| 8. | मैथिलीक अन्तर्व्यथा | 11 |
| 9. | बिलागेल आपकता अभिराम | 12 |
| 10. | करू मैथिल उद्धार | 14 |
| 11. | मातृभाषा केर अपन सहजता | 15 |
| 12. | बिस्थापनक दर्द | 17 |
| 13. | कीर्त्तिपुरुष विद्यापति | 19 |
| 14. | विद्यापति बेजोड़ | 21 |
| 15. | विद्यापति | 22 |
| 16. | चमकय मणिपद्म | 24 |
| 17. | घुरि अबियौ | 25 |
| 18. | मणिपद्मक इजोत (स्मृति काव्य) | 27 |
| 19. | महाकवि पंडित लालदास | 29 |
| 20. | वीर आ बलगर | 31 |
| 21. | वीरक सरिपहुं हो कठिन डगर | 34 |
| 22. | ध्वजा फहरेबे करतै | 38 |
| 23. | स्वाराष्ट्रक सुगति | 39 |
| 24. | संयम के राखह जोगाय | 41 |
| 25. | अभिनव चिक्का | 42 |


Vijoy Shankar Mallik

| | | |
|---|---|---|
| 87. | सुनु प्रियतम | 190 |
| 88. | मधुरस | 191 |
| 89. | निशबद्द राति मे | 192 |
| 90. | लोकगीत | 193 |
| 91. | भक्ति राग | 194 |
| 92. | भक्तिगीत | 195 |
| 93. | बोकारोक साहित्यलोक | 196 |
| 94. | जागि जाऊ जागि जाऊ | 198 |
| 95. | जहाँ जनमलि सीया | 200 |
| 96. | अध्यवसाय | 202 |
| 97. | घुरिआऊ | 204 |
| 98. | उठू उठू हे वीर | 205 |
| 99. | बटुआ दास | 206 |
| 100. | लाल बुझक्करीक तीन बानगी | 208 |
| 101. | छुतहर-घरहर | 211 |
| 102. | सब मे सुरबीज बिराजय | 214 |
| 103. | आँजुर भरि भरि आँकुर बाँटू | 216 |
| 104. | बूटन चमेली | 217 |
| 105. | सत्त्व सँऽ सत्वर | 221 |
| 106. | गृहस्थ धर्म | 223 |
| 107. | तारतम आब नहि | 224 |
| 108. | व्याकुल के नहि? | 226 |
| 109. | नव वर्ष | 228 |
| 110. | हृदय जुराविय | 229 |
| 111. | महायज्ञ थिक पावन परिणय | 230 |
| 112. | गिद्धेतर गिद्ध | 232 |
| 113. | मोक्ष पर हक ककर | 236 |
| 114. | आबि स्वयं यश लेहु | 239 |
| 115. | शब्द परिचय | 240 |


Vijoy Shankar Mallik

# ओ कहलनि

ओ, कहलनि...
ई सब थिक फूइस।
कहबे करता ने?
कारण
ओ, जे देखैत छथि
सुनैत छथि,
अनुभवो करैत छथि,
स्पर्श इन्द्रिय सँऽ
Vijoy Shankar Mallik
राति-दिन
सद्यः
एक दोसरक बीच
हरहर खटखट
बेतुका बकझक
अनेरे लटपट
आ तुरते छटपट
करैत प्राणान्त के।
तैऽ ने कहलैन ओ...

ओ की सोचता?
कखन सोचता?
ककरा लेल सोचता?
कियो ने मानै
हुनकर कहल।
ओहो देखैत छथि
आजुक, रंग-टीप
अन्हार-इजोत
पंडित-मूर्ख

आ झूठ-साँच।
दिन-दिन की घड़ी-घड़ी
बदलैत परदाक रंग
चित्र-विचित्र
ध्वनि ध्वनित
दुष्मन-मित्र
सभकिछु
उटपटाँग
Vijoy Shankar Mallik
तऽ कहवे ने करताह
ओ' ई सब फुइस।

ओ...
हँ, ओ...
हेता दार्शनिक?
आकि विषखोपरा
नहि तँऽ
जे सद्यह, से फूइस कोना?
होइ छै
एहने होइ छै
आइ-काल्हि
क्रन्दन, वंदन
बेमनक अभिनन्दन
आ ताहू पर मंथन
बिनु बातक।

चकराउ जुनि
मोनस्थिर क' सोचू।
गुमान, गुबार

एकात राखि सोचू।
फरिछा जायत आद्योपान्त
ब्रह्म गेठ खुलिजायत
बुझवै
सत्य असत्य के
'अन्तर'
तऽ निधोख
कहि सकबै ककरो...
काज ओहनेकरी
जे ककरो ने लगै
अनसोहांत, भारी
तखन हम कहब
ई नहि थिक फूइस
भले हुनका मोने।
ई सर्वाधिक फूइस।

Vijoy Shankar Mallik

# नागरिक वाणी

आनी मानी हम नहि जानी
जगजियार हो 'नागरिक वाणी'।
तीत मीठ करू की खटगर,
रान्हय अप्पन अपनहि ज्ञानी।।

जेहिखन उठइत कतहु उजहिया,
टूटि परै पुर के रहबैया।
गाँज सड़ैला हाथ ल' दौड़ै,
भीर पर ठाढ़ मुल्केन देखबइया।।

काछ माँछ जलजीव छानि नर,
तत्क्षण खुशहो रान्हि स्वादि नर।
उत्थर पोखरि गहीर कोना हैत,
मिलि की सोचय बैसि गामघर?

तैंऽ दुर्भक्षि कराल काल मुख,
समा रहल सभकेर चैन सुख।
छिट फुट बाजक मोल ने मोजर,
बढ़ि सकय ने गाम विकास मुख।।

निज भाषा आ तैंऽ निज लोक,
सूझबूझ विधि कही निधोख।
प्रतिकारे मुँह फुजै सुधारक
से 'नागरिक वाणी' देत भरिपोख।।

Vijoy Shankar Mallik